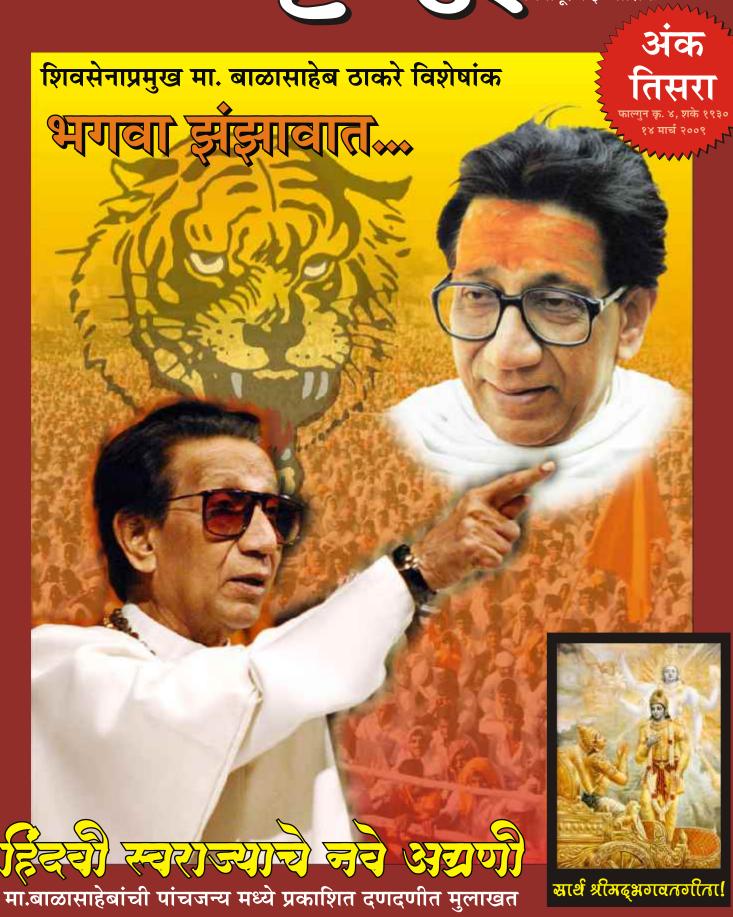
रेक्यं बलं समाजस्य तद्भावे स दुर्बलः, तस्मात ऐक्यं प्रशंसन्ति दृढं राष्ट्र धर्मश्च हितैषिणः!

# उर्दि अपित विनामूल्य इ-मासिक



## अनुक्रमणिका

₹.	मनागत		२
٦.	श्रीमद्भगवतगीता		ц
₹.	शिवसेनाप्रमुख - सचित्र दर्शन		ξ
٧.	बहुरंगी व्यक्तीमत्व	मा.अरुण जेटली	१२
ч.	भारत पर आक्रमण	वंदेमातरम फाउंडेशन	१६
ξ.	साहेब, मराठीचा मान आणि हिंदुत्वाचा अभिमान	अमित चिविलकर	१७
७.	हिंदवी स्वराज्याचे नवे अग्रणी	तरुण विजय (पांचजन्य)	२०
८.	जात्युच्छेदन आणि हिंदुत्व स्वा.सावरकर आणि शिवसेना	चिन्मय कुलकर्णी	२९
۶.	बोधकथा – मनातील आशा विझून देवू नका	ओमकार कुलकर्णी	२५





"तोंड वाजवून न्याय मिळत नसेल तर तोंडात वाजवून न्याय मिळवा" असा आऋमक पवित्रा घेऊन जन्माला आलेल्या आणि सामान्य लोकांसाठी सदैव तयार असणा–या शिवसेनेचे

संस्थापक म्हणजे शिवसेना प्रमुख हिंदूहृदयसम्राट माननीय बाळासाहेब ठाकरे. महाराष्ट्राला १ मे १९६० रोजी जरी मान्यता मिळून संयुक्त महाराष्ट्राची निर्मिती झाली असली तरी मराठी माणसाला स्वत्वाची जाणीव करुन देणारा महाराष्ट्राच्या इतिहासात सुवर्णाक्षराने लिहिण्यासारखाच आणखी एक दिवस म्हणजे १९ जून १९६६, या दिवशी ख-या अर्थाने मराठी माणसाला त्याचा आवाज सापडला. कारण तो दिवस म्हणजे मराठी जनतेवर होत असलेल्या अन्यायाची चीड आल्याने प्रथम बाळासाहेबांनी शिवसेनेची स्थापना केली.

"आवाज कुणाचा ......शिवसेनेचा" या गर्जने मागील अर्थ होता "आवाज कुणाचा......... मगठी माणसाचा".माथडी,चाकरमानी,कारकून,मिल मजदूर ,अश्या गरीब खालमानेने आयुष्य जगणा—या उपेक्षित मगठी माणसाला त्याचा आवाज शिवसेनेच्या रुपाने उपलब्ध करुन दिला तो माननीय बाळासाहेबांनी. कॉस्मोपोलिटन "बॉम्बे किंवा बंबई" मधे इथल्या भूमिपुत्राचा आवाज दबला जात होता.लिफ़्टमन किंवा कामवाली बाई अशीच ओळख असणाग मगठी माणूस बस मधे , हॉटेलात , पानवाल्याकडे , किगणा दुकानात मगठी बोलायला संकोचत होता , मोडका — तोडका मगठी मिश्रीत हिंदी बोलून स्वतःचीच टवाळी करुन घेत होता.पण तोच मगठी माणूस नुकतेच ड्रेस कोड रह झालेल्या पण अजुनही इंग्रजांच्याच काळात वावरणा—या फ़ाइव स्टार हॉटेल मधे जावून पण शुद्ध मगठीत ऑर्डर देवू लागला, तुला मगठी समजत नाही का रे असे विचारु लागला होता. हा त्याचा न्यूनगंड दूर करण्याचे काम बाळासाहेबांनी केले.

८०% समाजकारण आणि २० % राजकारण असे गणित मांडत एका लहान संघटने कडून शिवसेनेचे एका मोखा राजकीय पक्षात रुपांतरीत कधी झाले आणि लोकांच्या गळ्यातील ताईत कधी झाले याचा प्रवास शिवसेनेसोबतच लहानाचे मोठे झालेले शिवसैनिक,नेते सांगतात तेंव्हा तो संघर्ष पाहून मन आचंबित झाल्याखेरीज राहात नाही. मराठी इतकाच कडवा हिंदुत्वाचा पुरस्कार हा शिवसेनेचा खरा चेहरा आहे.परिणामांची



जबाबदारी ना झटकणारा नेता एकमेव बाळासाहेबच असतील. त्यांनी एखादी गोष्ट केली तर "हो मी केली ती, काय म्हणणे आहे?" इतक्या स्वच्छ शब्दात त्याचे समर्थन केले.

वरुन दाहक वाटणारे बाळासाहेब प्रत्यक्षात अतिशय प्रेमळ आहेत हे त्यांच्या संपर्कात आलेला कोणताही शिवसैनिक , विरोधक सांगू शकतो. डरकाळी फ़ोडणा-या ढाण्या वाघाची नखे आणि दात आपल्या बछड्याना कधीच लागत नाहीत. म्हणूनच महाराष्ट्र भर चा शिवसैनिक त्यांच्या एका हाके सरशी लाखोंच्या संख्येने गोळा होतो.त्यांचे भाषण, विचार ऐकण्यासाठी स्वखर्चाने १२-१२ तासाचा प्रवास करुन मैदान फ़ुलवून टाकतो. तीच खरी ताकद आहे हिंदुहृदयसम्राट बाळासाहेब ठाकरे यांची.

बाळासाहेबांना कर्मयोगी म्हणले पाहीजे, स्वतः कोणतेही अधिकारपदाची आशा ना धरता आपल्या सहका—यांचे गुण हेरुन त्यांना मोठे करण्याची विलक्षण हातोटी बाळासाहेबांच्यात आहे. किंबहुना त्यांचा स्पर्श हाच परीसस्पर्श आहे, त्यांचा स्पर्श झाला की माणसाचे सोनेच होवून जाते.माणसे निरखणे, पारखणे आणि घडवणे हे एक कलाकार, व्यंगचित्रकार असल्यामुळे बाळासाहेबांना सहज साध्य होत असावे.

उगवत्या सूर्यावर झेप घेणा-या मारुतीराया प्रमाणेच शिवसेनेचा जन्म झालेला आहे. मारुतीराया प्रमाणेच जन्मापासून संघर्ष कधी टळला नाही, पण शिवसेनेने तो संघर्षही मर्दपणे केला, छुपा, पाठीत वार हे मा. बाळासाहेबांच्या रक्तातच नाही.म्हणूनच हिंदूत्वाचा त्यागाचा रंग असलेला भगवा ध्वज हातात घेवून लोकांना पुढे नेण्यासाठी परमेश्वरानेच, आई भवानीने, बाळासाहेबांची योजना केली असावी.अञ्या या आमच्या लाडक्या नेत्याला, महाराष्ट्राच्या बुलंद आवाजाला, प्रखर तेजस्वी हिंदूहृदयसम्राट माननीय बाळासाहेब ठाकरे यांना मानाचा मुजरा आणि आमच्या ह्या "जाणत्या राजाला" उदंड आयुष्य लाभो हीच परमेश्वरचरणी प्रार्थना.

जय हिंद ! जय महाराष्ट्र !!





**झंझावातामागची विद्युल्लता** शिवसैनिकांची माता आदरणीय सौ.मीनाताई ठाकरे

## श्रीमद भगवदगीता (पाठ : द्वितीयोऽध्याय: सांख्ययोग )

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय । सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुनाला सांगतात "हे धनंजया , कर्मफ़लाची आसक्ति सोडून आणि यशापयशाविषयी समबुद्धी ठेवून योगमुक्त होत्साता कर्मे कर. अश्या समत्वबुद्धीलाच 'योग' असे म्हणतात."





साहेब जिथे उभे रहातात, तेच त्यांचे व्यासपीठ बनते.



या एका बोटात ताकद आहे, अवघा हिंदू पेटवायची!



साहेबांच्या व्यंगचित्रांनी अनेकदा दिल्लीसुद्धा हलवून टाकली



आज असलेल्या राजकीय परिस्थितीचे भाकीत द्रष्टया साहेबानी ६६ मध्येच केले होते.





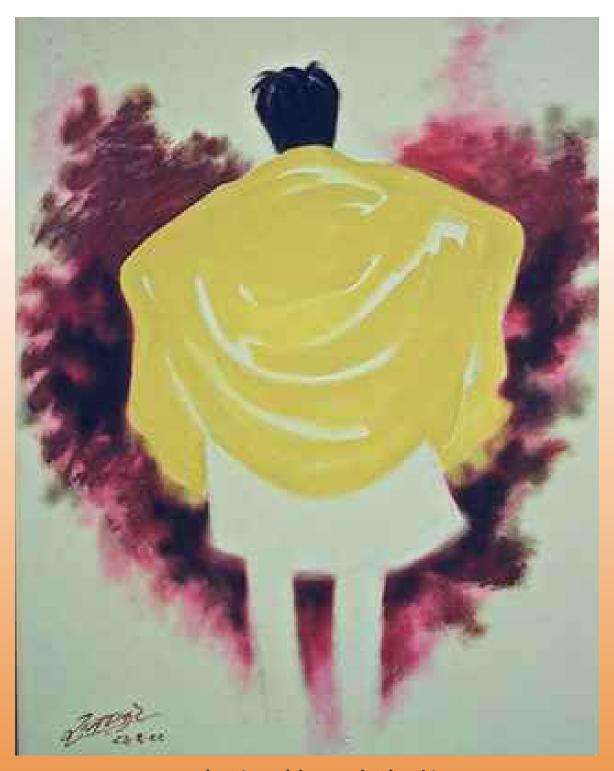
शिवसेना स्थापनेनंतरच्या मार्मिकचे मुखपृष्ठ





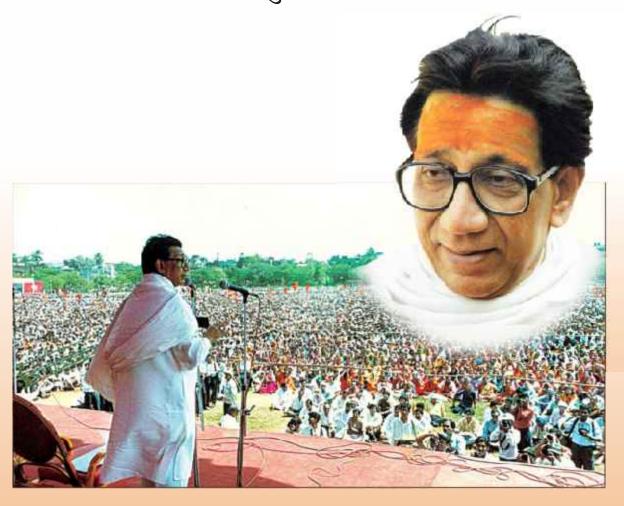
आणि शिवसेनेच्या पहिल्या विजयादशमी मेळाव्यासाठीचे आवाहन.





राज ठाकरे यांनी काढलेले बाळासाहेबांचे अर्कचित्र







या साहेबांवर, शिवसेनेवर जीवापाड प्रेम करणाऱ्या पिढया अशाच मिळाल्या नाहीत.



## बहुरंगी व्यक्तिमत्व

-- अरुण जेटली --

मैं बहुत वर्षों से भाजपा का सदस्य हूं और शिवसेना भाजपा का सबसे पुराना मित्र दल है ! बालासाहेब की कार्यशैली को वर्षों से देखता आ रहा हूं । और देखता रहा हूं उनके बयान और उनके तर्कों को । कैसे संगठन बनाया और उसे कैसे बढाया लिकीन मैं कभी बालासाहब से मिला नही था । लेकिन उनके बारे में जो कुछ अखबारों एवं पत्रिकाओं में पढता था । मेरी यह धारणा बन गयी थी की इस आदमीमें , इस व्यक्तिमें हिप्पोक्रेसी नहीं है । राजनीतिक तर्क को , आर्युमेंट को खुले तौर पर देना । उसको छुपाना –दिल में रखना, जबानपर कुछ नहीं लाना , यह उनकी नीति नहीं है ।

दूसरा राजनीतिक संवाद की कला बालासाहेब में कमाल की है। शायद कार्टूनिस्ट हैं, इसलिये उन्हें अभिव्यक्त करना ज्यादा आता हैं। वे एटिट्यूड के माध्यमसे, वन लाइनर के माध्यमसे, उदाहरण के माध्यमसे अपनी बात श्रोताओं के सामने व्यक्त करते हैं।

तीसरा किसी मुद्देपर अगर मास ट्रेंड (सामूहिक प्रवृत्ती ) एक दिशामें जा रहीं हो तो मैं भी उसी दिशामें ही जाऊं, यह उनका स्वभाव नहीं हैं । उसके खिलाफ़ जानाही उनकी आदत हैं। वे तुरंत फ़ैसला लेते हैं की यह गलत है तो मैं इसके साथ नहीं हूं ।



मुख्य राजनीतिक पार्टी के ढांचे के बाहर एक व्यक्तिगत ध्रुव उसके साथ एक वैचारिक मुद्दा खडा कर देना और एक संगठन बना लेना । उस संगठन में मैंने जो चीजें देखी की मुख्य धारा की पार्टी को कार्यक्रम करने के लिए भीड जुटानी पडती है । लेकिन शिवसेनाप्रमुख के लिए भीड अपने आप आ जाती है । जबकि बडी से बडी पार्टी को ट्रकोंमें , बसोंमें भरकर भीड लानी पडती हैं । यह सच है लेकिन शिवसेना प्रमुख का करिश्मा है। उसे आज करिश्मा कहें, लॉजिक कहें। आप उनकी विचारधारा से सहमत हो या असहमत, लिकिन इस मामले में वे बेमिसाल हैं।

शिवसेनाप्रमुख के बारे में जो भी मैं सोचता था, उससे यह धारणा थी की वे एक मुश्किल इंसान हैं, निभाने के लिए। उनके बारे में भय था। वे हिंदुत्वकी फ़िलोसोफ़ी के साथ जुडे हुए हैं और वे अपनी व्यक्तिगत बातचीत की शैलीमें, बहस की शैलीमें बहुत रफ़ है। उनके समर्थक कह सकते है की बहुत शार्प हैं। और उनके आलोचक कहते थे कि सतर्क है। तो इस आधार पर उनके व्यवहार में बहुत सावधानी से चलना पडता है। यह एक छबी थी मेरे मन में।

पिछले कई सालोमें कई बार उनसे मिलने गया और उनके व्यक्तित्व के बारेमें कुछ चीजे जो मेरे जेहन में थी , उसके बिल्कुल अलग थी । जब मैं उनसे मिलने जाता था, मैंने पाया कि वे व्यवहारमें बहुत ही सरल हैं। वह जो जटिल व्यक्ति मेरी छबी में था, वह कहीं है ही नही। वे पार्टी के बहुरंगी व्यक्तित्व है। पुराने किस्सो से लेकर सटीक और सार्थक मजाक उनकी शैली का हिस्सा है। अगर आप किसी एक राजनीतिज्ञ से मिलने जाते है तो यह सोचते है की सिर्फ़ राज्नीति पर ही चर्चा होगी। लेकिन शिवसेनाप्रमुख के साथ ऐसा नहीं है। अगर आप उनसे मिलने गये शायद २० % पॉलिटिक्स की बात होगी और ८० % सिनेमा से लेकर, सोशल इश्यू से लेकर, बिजनेस से लेकर क्रिकेट से लेकर हर बात होती हैं। और मैने अचानक पाया की सिवसेनाप्रमुख एक सुप्रिम व्यक्ति है।ऐसा कोइ विषय नहीं है, जिसपर आप उनसे बात नहीं कर सकते। व्यक्तिगत व्यवहार में , जीवन शैलीमें , बात्चीत में ......(क्योंकी हर बार मैं उन्हे उनके घर पर मिला) , मैंने महसूस किया कि एक हाइली सोफ़िस्टिकेटेड आदमी से मैं मिल रहां हूं। सोफ़िस्टिकेटेड शब्द का इस्तेमाल मैं इसलिए कर रहा हूं कि वे छोटी -छोटी बातों पर इतने जादा सतर्क रहते हैं , जैसे आप कहां बैठोगे , आपकी इटिंग टेस्ट क्याहै , आप कौन सी सॉफ़्ट ड्रिंक पसंद करेंगे , कौन सा खाना आपको पसंद है , इसलिए कौन सा खाना मैने आपके लिए बनवाया हैं । मतलब इतनी छोटी छोटी बातें हैं जिनके बारें में हम लोग कभी चिंता नही करते। इसका



असर यह हुआ की उनसे मुलाकात से पहले दस मिनट्में ही मैं काफ़ी सहज हो गया और उनके साथ बात करने से पहले उनके बारेमें जो छिव थी, वह खतम हो गयी। जिद अधिकतर चीजोंमें नही थी। कई बार यह होता है कि गठबंधन की राजनीति में इस पार्टी का यह स्टैंड हैं उस पार्टी का यह स्टैंड है , और विकृति आ जाती है। लेकिन आप अगर तर्क के आधार पर उनसे बात करना चाहें, तो वे हमेशा तैयार होते हैं।

मेरे साथ ऐसे एक दो मौके आए कि किसीने उनको ब्रीफ़ किया था कुछ इश्यू पर .... पर जब मैने उनसे चर्चा शुरु की और उनको तस्वीर का दुसरा पहलू बताया तो मैने देखा उनकी प्रतिक्रीया बहुत ईमानदार थी। उन्होने स्वीकार किया की मुझे इस बारे में जो बताया गया है, वह शायद अधुरा है और उन्होने मेरी बात सुनने के बाद उस पर पुनर्विचार करने का रुख भी दर्शाया। उनमें यह भी हैं। तो इसलिए उनमें इस ढंग की कोइ जिद नही है कि मैने कह दिया और अब मैं इस पर डटा रहूंगा। इस तरह की कोइ बात वे नही करते। और इसलिए शायद महाराष्ट्रका और केंद्र का हमारा शिवसेना के साथ गठबंधन है और छोटे–मोटे मुद्दोंको नजरंदाज कर दें तो व्यापक स्तर पर सफ़ल रहा हैं।

जब मैं उनको पहली बार मिला कि १९९३ में मुंबई दंगों के बाद उनकी छिव को , उनकी भूमिका को मिलन करने की कोशिश की गयी। वे आज भी अपनी इस भूमिका को सही मानते हैं। लेकिन उनका एकही कहना है कि उन्हें इसमें जानबूझ कर फ़ंसाया गया हैं। उन्होंने मुझे सारे दस्तवेज दिए। जिसमें श्रीकृष्ण जांच आयोग की रिपोर्ट की प्रति भी थी। कुछ ऑफ़ेडिव्हेट की फ़ाइल। और मैंने बहुत समय लगाकर वे पढें। और मैं यह चाहूंगा कि जितनी भी राजनीतिक पर्यवेक्षक है, मिडिया में, राज्नीतिक जीवन में, सार्वजनिक जीवन में .....कई बार मिडिया के माध्यमसे एक छिब बन जाती है, और वह सच होने का भ्रम बन जाता है। और इम्प्रेशन यह था कि १९९३ के दंगोमें क्योंकी जिस्टिस श्रीकृष्ण रिपोर्ट में कुछ दिया, इसलिए उसमें बालासाहेब का हाथ रहा हैं, ऐसा रिपोर्ट में कहा गया है। और कोर्ट में केस भी डाला गया। गिरफ़तार करने की भी बात आई। मौजुदा महाराष्ट्र सरकार ने भी कहा कि हम बालासाहेब के खिलाफ़ कार्रवाई करेंगें। लेकिन तथ्य कहा है और मिडियामें इमेज कहां है

लिकिन मैं सारे दस्तावेज देखनेके बाद मानता हूं कि श्रीकृष्ण रिपोर्टमें बालासाहेब के बारे में जो कहा गया हैं, वह सिर्फ़ बयानों पर आधारित है और बहुत संशयास्पद है। दो आधार बनाए गये हैं। बालासाहेब कहीं गये, कहीं भाषण दिया , कहीं लिखा लिकिन ऐसा कहीं नहीं है एक ऐसा पत्रकार जो शिवसेना विरोधी है , उसने बयान दे दिया "मैं उनके घर मिलने गया था। और मेरे सामने यह टेलीफ़ोनपर बात कर रहें थे और पूछताछ कर रहे थे कि दंगोमें क्या हो रहा है , क्या नही हो रहा है । कितने लोग मारे गए , हमारे कितने लोग मरे, उनके कितने लोग मरे "। यह एक बडा मजाक है कि एक राजनीतिक विरोधी के बयान को पुख्ता सबूत मान लिया गया । उस टेलिफ़ोन कॉल को शिवसेनाप्रमुखने ओवरिएक्ट किया इसी को सबूत मान लिया गया। जबिक बालासाहेब का कहना है कि ऐसा कोई पत्रकार उनसे मिल ही नहीं सकता था । मिलने सेपहले उसे चार सुरक्षा चक्रोंको पार करना पडता । और उस दिन ऐसा कोइ पत्रकार उनके पास आया ही नहीं । इसी संदेह जनक सबूत को आधार बनाया गया और दूसरा टाइम्स मैगेजिन के एक इंटरव्ह्यू में जहां शिवसेनाप्रमुख को 'मिसकोट' किया गया। ये दो आधार बताये गये। अब इंटरव्यू तो एबस्ट्रॅक्ट बात है। मैने क्या इंटरव्यू दिया, इससे यह तो साबित नही होता की दंगोमें मेरी क्या भूमिका थी। इसलिए अब क्योंकी १९९३ का वह मामला ठंडा पड चुका है तो जिन लोगों ने उनकी भूमिका को लेकर प्रश्न उठाये, मुझे लगता है की उनके बयानों वाले रिपोर्ट के उस हिस्से पर राजनीतिक पर्यवेक्षकों के बीच फ़िर से चर्चा होनी चाहिए।

इसके अलावा आर्थिक मुद्दों पर मेरी उनसे बात हुई। वे हर चीज पर सरकार के नियंत्रण के खिलाफ़ थे। बालासाहेब का मत यह था कि उद्योगपतियोंको छूट दो, उनको बढने दो, मुझे लगता है कि वे उद्योग जगत के लिए बडे राभिचंतक है।

एक बात मैं आपको बताउ कि जब बालासाहेब को मैं मिलने गया था तो बातचीत में 'बॉम्बे 'शब्द का इस्तेमाल कर रहा था। मैनी जितनी बार 'बॉम्बे ' कहा उतनी बार, उन्होने मुझे टोका। कहा 'बॉम्बे' नहीं, 'मुंबई 'कहिए। दो



बार उन्होने मुझे टोका , तीसरी बार मुझेभी याद हो गया । टोका मतलब बहुत ही ज्ञालीनतासे , प्यार से ।

जहां तक राजग का सवाल है, कई बार ऐसे फ़ैसले लेने पडे जो शिवसेना के नीतियों में फ़िट नही बैठते थे। इसका उन्होने विरोध किया। इसके खिलाफ़ उन्होने अपने विचार खुलकर और मजबूतीसे व्यक्त किए। लेकिन उन्होने राजग सरकार की जरुरतों को महसूस किया और समझा। तो वे बहुत जादा प्रैक्टिकल भी है। व्यक्तिगत संबंधोंका बालासाहेब की राजनीति में बहुत बडा रोल है। उन्हे लगा की कोई गलत कर रहा है, लेकिन वे उसे पसंद करते है तो वे उसके साथ खडे होते है। संजय दत्त का उदाहरण हमारे सामने हैं। वैसे तो संजय दत्त का केस मुंबई बॉम्बब्लास्ट का केस है। जो बालासाहेब के विचार धारा के एकदम खिलाफ़ है। लेकिन वे उसके साथ खडे हो गये \ इसकी वजह से उनके लोगोंको भी लगता है की बालासाहेब से बात हो गयी तो वह हमारी मदत करेंगे। तकलीफ़ में मुंबई में यह रिवाज है कि आदमी जब बहुत परेशान होता है तो बालासाहेब के पास चलो। यह रिवाज इसलिए बना, क्योंकी बालासाहेब की जबान की एक कीमत हैं। यहीं मैं पिछले कई सालोंसे महसूस कर रहां हूं।



#### भारत पर आक्रमण

नमस्कार,

मुंबई में ताजपर जो हमला हुआ वो तो अभी शुरूआत है। टाइम्स, डी.एन.ए., इंडिया टुडे और दूरदर्शन के अनुसार भारत पर आतंकवादी हमले २०२५ तक होते रहेंगे।

इंग्लेंड के प्रसिद्ध समाचार पत्र 'दी इकानामिस्ट' के अनुसार मुसलमानों का ये विश्वास है कि कुरान के अनुसार जेहादी आतंकवादी लोग भारत तथा विश्व में अल्ला का राज्य स्थापित करने के लिये अपनी जिंदगी कुर्बान कर रहे है उन्हें हर तरह की मदद पहुंचाने वाले को अल्ला खुश होकर सीधा स्वर्ग भेज देता है। जहाँ संसार के सारे ऐशोआराम और ७२ अतिसुंदर हुरें मिलती हैं।

भारत में लाख मदरसों में मुसलिम को १० साल की उम्र से यही सब पढाया जाता है। जिससे हर साल लाखों जेहादी (धर्म युद्ध) आतंकवादी तैयार होकर निकलते जा रहे हैं। वे सारे देश में फैल रहे हैं .जो मनुष्य बम बनकर अपनी जान देने को तैयार रहते हैं ताकि वे जल्दी स्वर्ग जाकर वहां का अपूर्व सुख भोग सकें। इसलिये काश्मीर में भयंकर अत्याचार के बाद २५ हजार हिंदू कत्ल कर दिये गये। यहीं सारे भारत में होगा।

पाकिस्तान में भी १ लाख से अधिक मदर से तैयार हो गये है जहां जेहादी आतंकवादी तैयार किये जाते हैं। उनकी मदद से पाकिस्तान भारत को अपना गुलाम बना लेना चाहता है। दुर्भाग्य से हिंदू सो रहा है। विश्वस्त सूत्र के अनुसार हिंदुओं व सेक्युलरवादी सरकार की कमजोरियां देखकर विश्वभर के इस्लामी आतंकवादियों ने भारत के १२०० निर्जन द्वीपों में अपने जेहादी केन्द्र खोलकर भारत को इस्लामिस्तान बनाने की घातक योजना बनाई है। हिंदू समाज के पास अपनी रक्षा के सिर्फ १५ वर्ष बचे हैं।

दुर्भाग्यवश सेक्युलरवादी राजनैतिक दल आतंकवादियों की मदद से चुनाव जीतने के लालच में उन्हें हर तरह की मदद पहुंचाकर उनकी हिम्मत चौगुनी बढ़ा रहे हैं। ५० साल से किसी आतंकवादी को आजतक सजा नहीं दी गई। अफजलगुरूको फांसी नहीं दी गई। काश्मीर के गवर्नर जगमोहन आतंकवादियों को कड़ाई से दबा रहे थे इसलिये उन्हें उनके पद से हटा दिया। बांग्लादेश के ३ करोड़ घुसपैठियों को उनके वोट के लिये भारत की नागरिकता दी जा रही है। भयंकर गोहत्या व धर्मपरिवर्तन हो रहा है। सर्वत्र महान हिंदू धर्म व देवीदेवताओं का अपमान हो रहा है। सेक्युलरिज्म के नामपर स्कूलों में गीता, रामयण की शिक्षा नहीं दी जाती। इससे हिंदू युवकोंका घोर नैतिक पतन हो रहा हैं।

मुसलमानों की आबादी अधाधुँद बढ रही है। एक मुसलमान की ४ पत्नियों के ५२ हैं (हिंदूवाइस) यदि यही हालत रही तो ३० साल बाद भारत में इस्लामिस्तान बन जायेगा। हिंदुओं का कत्ले आम होगा। विधर्मी लोग विदेशों से सैकडों करोड़ रूपया भेज रहे हैं जिससे प्रतिवर्ष लाखों हिंदुओं का ईसाई व इस्लाम में धर्मपरिवर्तन हो रहा हैं। सेक्युलरवादी कम्युनिस्ट, सपा, बहुजनपार्टी, कांग्रेस इत्यादि अपने वोट के स्वार्थ के लिये इन भयानक खतरों को नहीं रोकते। इससे मुसलिम मुहल्लों में आर.डी.एक्स और शस्त्रा गृहयुद्ध के लिये भरे जा रहे हैं। जिसमें प्रत्येक हिंदू परिवार के लोग मारे जाएंगे।

डी.एन.ए.- ता. १४.८.२००८ व इंडिया टुडे - १६.२.२००९ के अनुसार पाकिस्तानी संस्था आईएसआई भारत में एक लाख उन्नहत्तर करोड के नकली नोट आंतकवादीयों के मार्फत भारत में फैलाकर उनकी अर्थव्यवस्था नष्ट कर रही हैं पर सेक्युलरवादी सरकार सब जानकर भी चुप हैं

हिंदू वोट बेंक बनाओ, भारत बचाओ

इन सबका एक मात्र उपाय है हिंदू एकता द्वारा विश्वकल्याणकारी हिंदू वोट बेंक बनाना। इससे कट्टरवादी मुसलमानों का तुष्टीकरण बंद हो जायेगा और धीरेधीरे आतंकवाद खत्म हो जायेगा। हिंदू – मुस्लिम सद्भाव उत्पन्न होगा। भारत में शांती और समृद्धी आयेगी। नैतिक उन्नती होकर भ्रष्टाचार व दुराचार दूर होगा। राम मंदिर बनेगा, रामराज्य आयेगा। लोकसभा चुनाव में हिंदुत्ववादी पार्टीकी ३०० सीट आयेगी। इसके लिये देश के प्रसिद्ध संत २० फरवरी से सारे देश का दौरा करके हिंदुओं में एकता उत्पन्न करके हढ हिंदू वोट बेंक बनाने का प्रयत्न करेंगे। इस कार्य में धन की बहुत आवश्यकता होगी। आप अपनी रक्षा के लिये करोड़ो रुपया एकत्र करके इस कार्यक्रम में दे।

अब केवल अस्पताल और स्कूल बनाने से देश नहीं बर्चेगा। क्योंकि ये सब आतंकवादियों के कब्जे में चला जायेगा। कृपया धन इस पते पर भेंज दिजीये।

''वन्देमातरम् फाऊडेशन'' या हिन्दू संगम संकट मोचन आश्रम, रामकृष्णपुरम नं. ६, नई दिल्ली – ९९० ०२२

> दोनो में ८० प्राप्त होगी .। कृपया इसे इंटरनेट पर डालिये। आपका शुभिवंतक आंनद शंकर पंडया

अध्यक्ष, देश बचावो समिती, अध्यक्ष, वंदेमातरम फाऊडेशन, उपाध्यक्ष, विश्व हिंदु परिषद ९८२०३२९५८९



## साहेब – मराठीचा मान आणि हिंदुत्वाचा अभिमान

--अमित चिविलकर (९२२०५०४६७३)

आदरणीय 'बाळासाहेब ठाकरे' हे महाराष्ट्राचे एकमेवाद्वितीय व्यक्तिमत्व आहे.एक आंतर्राष्ट्रीय व्यंगचित्रकार ते हिंदुत्ववादी नेते असा साहेबांचा प्रवास आहे. महाराष्ट्रातील सर्वसामान्यांचे तसेच तरुणांचे आदर्श आहेत साहेब.ज्यांनी राजकारणातील पदे सर्वसामान्यांना दिली, त्यांना मोठे केले पण स्वतः मात्र सत्तेच्या राजकारणापासून चार हात दूर राहिले.साहेब आज देशातील करोडो हिंदूंचे आधारस्थान आहेत.महाराष्ट्रातील खास करुन मुंबईतील जो काही मराठी माणूस आज जो ताठ मानेने उभा आहे त्याचे सारे श्रेय साहेबांनाच जाते.साहेबांनी आजपर्यंत सर्वात जास्त प्रेम शिवसैनिकांवरच केले आणि त्यांचा शिवसैनिक असण्याचा मला खुप खुप अभिमान आहे.

संयुक्त महाराष्ट्राच्या चळवळीत महाराष्ट्राचे मोठे मोठे नेते कार्यरत असताना बाळासाहेब आपल्या कुंचल्याच्या फ़टका-यांनी महाराष्ट्रद्रोह्यांवर आसूड ओढत असत.पं.जवाहरलाल नेहरु, मोरारजी देसाई, सदोबा पाटील यांच्या सारख्या नेत्यांनाही साहेबांनी सोडले नाही.पुढे १९६० च्या दशकात मुंबईत मराठी माणसांवर होणा-या अन्यायाने साहेब खुप अस्वस्थ झाले.त्यांनी 'मार्मिक' साप्ताहिक सुरु केले.'वाचा आणि थंड बसा ' या लेखमालिकेतून मराठी माणसांवरील अत्याचारांना त्यांनी वाचा फ़ोडली.शिवसेनेच्या माध्यमातून अन्यायाची जाण मराठी तरुणांना त्यांनी करुन दिली, त्यांची मने पेटवली आणि त्यांचा मराठी तरुण जागा झाला.त्याला आपल्या हक्कांची जाणीव झाली आणि तो अन्यायाविरोधात लढू लागला.

साहेबांनी सुरु केलेल्या लढ्याला मराठी माणसाचा प्रचंड पाठींबा लाभला.महाराष्ट्रात गावोगावी शिवसेनेच्या शाखा सुरु होऊ लागल्या, साहेबांच्या विचारांची देवाणघेवाण शिवसेना शाखांमधून होऊ लागली , सर्वसामांन्यांची गा–हाणी ऐकून घेऊन सोडवली जाऊ लागली.काही वर्षातच शिवसेनेने महाराष्ट्राच्या राजकारणात आपला



ठसा उमटवला.साहेबांनी केलेल्या प्रत्येक आवाहनाला मराठी माणूस खंबीर उभा राहू लागला.परंतु साहेबांच्या लढ्याला काही मराठी माणसेच आणि वेगवेगळया पक्षांचे नेते,पत्रकार, विचारवंत विरोध करत असत.त्यावेळी त्यांचे विडल प्रबोधनकार ठाकरे यांचा आशिर्वाद, साहेबांची स्वतःची जिद्द व हिंम्मत,समर्थ कुंचला आणि मराठी जनतेबद्दल जाज्वल्य अभिमान हीच त्यांची शिक्तस्थाने होती.

हिंदूस्थानमध्ये हिंदुत्वाची चळवळ फ़ार पूर्वी पासून सुरु होती, तरीसुद्धा ही चळवळ तळागाळापर्यंत पोहोचवण्याचे काम साहेबांनीच केले.१९९२-९३ ची मुंबईतील दंगल असो किंवा मालेगावातील गणपतीविसर्जन मिरवणूकीवर धर्मांध मुस्लिमांची सतत होणारी दगडफ़ेक असो, महाराष्ट्रात आणि देशात प्रत्येक ठिकाणी हिंदू मार खात होता, तेंव्हा प्रत्येकवेळी साहेबांनीच हिंदूंना धीर दिला.धर्मांधांविरुद्ध लढण्याची ताकद आणि बळ दिले.आणि त्यांची पाठ सुद्धा थोपटली.

१९९२ साली बाबरी मशीद पाडली तेंव्हा काहींनी हात झटकून हे काम शिवसैनिकांनी केले असे सांगू लागले तेंव्हा साहेब म्हणाले " हे काम जर माझ्या शिवसैनिकांनी केले असेल तर त्यांचा मला सार्थ अभिमान आहे."साहेबांनी आयुष्यात कधीही आपले शब्द मागे घेतले नाहीत, जी भूमिका मांडली ती रोखठोक!

१९९३ च्या मुंबईतील जातिय दंगलीमध्ये जागोजाग हिंदूंची कत्तल करण्याचे काम धर्मांधांनी सुरु केले, जोगेश्वरीच्या बने कुटुंबातील लोकांना जिवंत जाळले गेले, हिंदू आया-बहीणींच्या इज्जतीला हात घालण्यापर्यंत या धर्मांधांची मजल गेली तेंव्हा शिवसैनिकांनी आपल्या आया-बहीणींची अब्रू वाचवण्याचे काम केले.मुंबईतील हिंदूंना साहेबांची ताकद समजून आली आणि देशभरातील हिंदूंना साहेबांचा आधार वाटू लागला.

गोधातील धर्मांधांच्या मस्तीचा कठोर पणे बंदोबस्त करणा-या गुजरात चे मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी यांच्यावर मिडीया तुटून पडली , भाजपा मधूनही मोदींना एकाकी पाडण्याचे काम सुरु झाले तेंव्हा मित्रपक्ष म्हणून अडवाणींना साहेबांनी "मोदींना मुख्यमंत्री म्हणून कायम ठेवण्यास" सांगितले.आज आपण सारे पहातोच आहे की



आजचा गुजरात हा एक आदर्श राज्य म्हणून देशात नाव कमावत आहे.हि सुद्धा एकप्रकारची साहेबांची जादू मानल्यास अतिशयोक्ती ठरणार नाही.गेल्यावर्षी सर्वाधिक गाजलेल्या मालेगांव बॉम्बस्फ़ोटात अडकवलेल्या हिंदू साध्वी प्रज्ञा सिंह हिच्यावर अत्यंत घाणेरडे अत्याचार करण्यात आल्याच्या बातम्या आल्यावर, कोणतेही आरोप सिद्ध ना करता महाराष्ट्र ए.टी.एस. साध्वींना दहशतवादी ठरवण्याचा प्रयत्न करत असतानाच साहेब साध्वींच्या मागे खंबीर उभे राहीले आणि कॉन्ग्रेस चे हस्तक असल्यासारखे देशात हिंदू दहशतवाद वाढत आहे हे सिद्ध करण्याचा आटापिटा करणा–यांना साहेबांनी जबरदस्त परखड शब्दात उत्तर दिले.

साहेबांचे हिंदूत्व हे सर्वसामान्य मुसलमानांच्या विरोधात नाही तर जे जात्यांध मुसलमान आहेत, ज्यांचा आजही पाकिस्तानला पाठिंबा असतो, जे देशद्रोही आहेत अश्यांना कुठल्याही परिस्थितीत साहेब सोडत नाहीत.अंधश्रद्धेच्या विरोधात असणारे साहेब फ़क्त हिंदूंच्याच अंधश्रद्धांवर हल्ला करणा—या पण मुस्लिम आणि खिश्चन धर्मातील अंधश्रद्धांवर बोट ही ना उचलणा—या 'अंधश्रद्धा निर्मूलन समिती' वर ही साहेब बरसतात.आपल्या संस्कृतीत मुबलक प्रमाणात चांगले उत्सव असताना परिकय 'व्हॅलेंटाईन डे' सारखे दिवस साजरे करणा—या आजच्या तरुण पिढीला आपल्या संस्कृतीची योग्य माहीती व्हावी आणि 'व्हॅलेंटाईन डे'सारखी थेरं बंद व्हावीत असे साहेबांना ठामपणे वाटते.

"हिंदूत्व" हेच राष्ट्रीयत्व मानणारे आमचे साहेब म्हणूनच करोडो हिंदूंचे "हिंदूहृदयसम्राट" आहेत.





## हिंदवी स्वराज्याचे नवे अग्रणी

तरुण विजय (संपादक , पांचजन्य)

एक काळ असा होता की, हिंदू धर्मियांचे संगठन,सुरक्षा आणि स्वाभिमान याविशयी बोलणे म्हणजे मागासले पणाचे समजले जाई.असा विषय काढणा-यांकडेच तिरस्कृत नजरेने पहिले जात असे.हिन्दुस्थानच्या फ़ाळणीनंतर राष्ट्रवादी विचारांकडे कुत्सित नजरेने पाहणारे मेकोले आणि मार्क्स यांचे मानसपुत्र पंडित नेहरु यांचाच हिंदुस्थान सरकार आणि सरकारच्या धोरणांवर प्रभाव होता आणि नेहरुंवर पाश्चात्य संस्कृतीच्या मायाजाळाचा पगडा असल्याने पर्यायाने सरकार आणि सरकारी धोरणही त्यातच गुरफ़टले.मुसल्मान ही वेगळी "कौम" आहे.या मुद्यावरच आमच्या मातृभूमीची फ़ाळणी झाली होती.त्यांच्यासाठी (मुसलमानांसाठी) हिंदुस्थानात जागा असूच शकणार नाही , त्यामुळे ते आपला वेगळा देश बनवतील हेच फ़ाळणीमागचे सूत्र होते.मात्र आम्ही कधीच द्विराष्ट्रवादी सिद्धांत मान्य केला नाही. पण शेकडो वर्ष्यांच्या संघर्षातून वाटचाल करणा-या हिंदू धर्मियांना किमान स्वातंत्र्यानंतर तरी आपल्या जखमांवर मलम लावण्याची संधी मिळायला हवी होती.आपले रक्षण आणि विकासासाठी हिंदूंनी सिद्ध व्हायला हवे होते.बरे ते नाही तर किमान यासाठी अनुकूल वातावरण निर्माण व्हायला हवे होते.परंतु तेही झाले नाही आणि १५ ऑगस्ट १९४७ हा दिवस देखील संघर्षाला पूर्णविराम देणारा ठरला नाही.

हिंदुस्थानवर इस्लामी आऋमकांनी केलेल्या ऋर हल्ल्या नंतरही जे मुसलमानांना शक्य झाले नाही ते ब्रिटिशांनी शिक्षण आणि संस्कृतीमध्ये आणलेल्या विकृतीच्या माध्यमातून करण्याचा प्रयत्न केला.ब्रिटिशांना त्यात ब–यापैकी यशही आले.हिंदुस्थानी जनता आणि येथिल तरुण पिढी पाश्चात्य शिक्षण आणि त्यांच्या संस्कारात रमू लागली.स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर पाश्चात्यांच्या आहारी गेलेली हीच पिढी सत्तेतील उच्चपदांवर विराजमान होवून पं. नेहरुंच्या संरक्षणार्थ पुढे येऊ लागली.इंग्रजी वर्तमानपत्रे आणि बौद्धिक क्षेत्रात मोडणा–या संस्थाही पाश्चात्य संस्कृतीकडे झुकलेल्या व्यक्तिंच्या ताब्यात गेल्या.त्याचा जनमानसावर प्रतिकूल परिणाम होऊ लागला.या सर्वांचा एकत्रित परिणाम असा झाला की या सनातन



हिंदुराष्ट्रात हिंदुत्वाचा विषय काढणे हा सर्वात मोठा गुन्हा ठरु लागला.

आदरणीय शिवसेनाप्रमुख श्री.बाळासाहेब ठाकरे यांचे व्यक्तिमत्व , त्यांची वीरवाणी आणि पराऋमी राजकारण यामुळे हिंदुत्विवरोधकांचा पराभव सुरु झाला , ही आनंदाची बाब आहे.राष्ट्रीय स्तरावर हिंदू जनमानस आणि अर्थातच या देशातील राष्ट्रवादी व देशभक्त समाजाला बाळासाहेबांच्या रुपात आशेचा किरण मिळाला.एक शिक मिळाली.

एखादी व्यक्ति एव्ह ह्या कमी कालखंडात राष्ट्रीय पातळीवर जनतेच्या गळ्यातील ताईत बनावी याचे उदाहरण इतिहासात दुर्मिळच आहे.पण जनतेच्या आशा— आकांक्षांचे प्रतिक बनलेल्या बाळासाहेबांनीच ते शक्य करुन दाखवले.एक काळ असा होता की , शिवसेनेला संकुचित , प्रांतवादी,भाषावादी अशी दूषणे दिली जात असत.परंतु बाळासाहेबांनी राष्ट्राच्या दुर्बलतेची नाडी अचूक ओळखली आणि कोणतीही तडजोड न स्विकारणा—या निःसंदिग्ध , हिंदुत्वाची गर्जना केली.पं.नेहरु आणि त्यांच्या चेल्याचपेट्यांनी 'हिंदुत्वाबद्दल' जे हीन वातावरण निर्माण केले होते व तथाकथित सुधारणावादी,धर्मनिरपेक्षवाद्यांनी आपल्या चाटुगिरीतून त्यात भर घातली होती , त्याविरुद्ध बाळासाहेबांनी आपल्या सिंहगर्जनेतून जे रान उठवले त्यामुळे देशभरात चैतन्याची लाटच निर्माण केली.

बाळासाहेबांना मी सर्वप्रथम ऑक्टोबर १९८९ मध्ये भेटलो.त्यावेळी घेतलेल्या मुलाखतीत त्यांना पहिला प्रश्न केला तोच तिरपा आणि आऋमक होता.कारण हिन्दूंचे संघटन करण्यासाठी सर्वसमावेशक , व्यापक,उदार आणि सर्वांच्या हिताचा 'हिंदुत्वाचा' विचार पुढे न्यायला हवा आणि शिवसेना ते करत नाही अशी माझी धारणा होती. मात्र बाळासाहेबांनी माझ्या प्रश्नांची पारदर्शी व निर्भीडपणे उत्तरे देत ढोंगी धर्मनिरपेक्षतेची अशी काही शकले उडवली की माझ्या सर्व शंका— कुशंकांचे केवळ निवारणच झाले नाही , तर मी ही मुलाखत आयुष्यात विसरु शकणार नाही. या मुलाखतीमधील काही सारांश इथे देणे मला आवश्यक वाटते.माझा पहिला प्रश्न होता —

प्रश्न : शिवसेना ही केवळ महाराष्ट्रापुरती मर्यादित असणारी एक संकुचित



संघटना आहे.महाराष्ट्रीयन जनतेच्या हक्कासाठीच लढणारी ही संगठना आहे, असा आरोप होतो.

बाळासाहेब : खरे सांगायचे झाले तर शिवसेनेची सुरुवात अशीच झाली होती आणि भाषावार—प्रांतरचना हे खूळ काही मी काढलेले नव्हते.ते काम नेहरुंचे. पण आता भाषावार—प्रांतरचना अत्यंत कठीण आहे.आमच्याच राज्यात आम्हाला कष्टाची भाकरी द्या , ही आमची मागणी होती.ही मागणी आर्थिक होती.प्रांतवादी किंवा सांप्रदायिक नव्हती.परंतु वर्तमानपत्रांनी आम्हाला 'सांप्रदायिक' ठरवले.महाराष्ट्र फ़क्त मराठी माणसांचाच हा नारा मी कधीच दिला नाही.माझे म्हणणे फ़क्त इतकेच होते की , आमच्या तरुणांना नोकरी मिळाली नाही तर त्यांनी कुठे जायचे ?

प्रवन : मग या मागणीत महाराष्ट्रातील जनतेबरोबरच गुजराथी, तामिळी आणि उत्तर प्रदेशातील लोकांचाही समावेश आहे?

बाळासाहेब : हो सगळे, अगदी सगळे.मराठी , गुजराथी, किंवा दक्षिण भारतीय हा भेदभाव आम्ही करत नाही.आमच्या लोकाधिकार समितीमध्येही सगळे लोक आहेत.मराठीही आहेत आणि बिगर मराठीही आहेत.महाराष्ट्राच्या बाहेरही शिवसेनेच्या शाखा आहेत.

प्रश्न : भाजपाशी युती करण्यासाठी आपण उत्सुक का आहात ?

बाळासाहेब :हिंदूंच्या मतांचे विभाजन होऊ नये म्हणून.

प्रश्न : हिंदू तर अन्य पक्ष्यात ही आहेत.

बाळासाहेब :त्यांच्यात एव्हडी प्रखरता आणि तेजस्वीपण नाही.त्यांच्यात हिंदूंसारखे आहेच काय ?

प्रश्न :आपल्या आणि अन्य पक्ष्यांच्या हिंदूत्वात काय फ़रक आहे ? बाळासाहेब :माझे हिंदुत्व प्रखर आहे.उग्र आहे.बेडर आहे.माझ्या हिंदुत्वात राष्ट्रवाद अधिक आहे.

प्रश्न : आता तर सोनिया गांधी पण मंदीरात जातात.अलीकडेच श्रीकृष्ण जन्माष्टमीच्या दिवशी त्या मंदीरात पूजा करतानाचे फ़ोटो पण प्रसिद्ध झाले आहेत.



बाळासाहेब :जेंव्हा निवडणुका जवळ येतात ना , तेंव्हाच यांना मंदीर आठवते.तसे पाहिले तर पंतप्रधान किंवा मुख्यमंत्री हे जेव्हडे मुसलमानांच्या सणांमधे सहभागी होतात ना त्याच्या १ % ही ते हिंदूंच्या सोबत त्यांच्या सणात सामील होत नाहीत.उलट आमच्यावर जाचक अटी घालतात. १२ वाजे पर्यंत पूजा संपलीच पाहीजे.बॅण्ड वाजवू नका.भजन कीर्तन करू नका.याच रस्त्याने जा , त्या रस्त्याने जाऊ नका ! परंतु मुसलमान मात्र केंव्हाही कोठेही कसेही जाऊ राकतो.वटेल ते करु राकतो.त्यांच्यावर काही निर्वंध नाहीत.दूरदर्शनवर तर ईद किंवा कोणत्याही मुस्लिम सणांच्यावेळी त्यांचे इतके कार्यक्रम चालू असतात की वाटते , आम्ही पाकिस्तानातच आहोत.

हिंदुस्थानात सर्वप्रथम सन्मान कुणाला द्यायचा असेल तर तो हिंदुंनाच द्यायला हवा.नंतर आम्ही सर्वांचा सन्मान करु.आणि हिंदुस्थानातच कोणी हिंदूंचे अधिकार हिसकावून घेऊ लागला , तर अञ्चा मुसलमानांना आम्ही इथे राहून देणार नाही.जिथे चांगले वाटेल तिथे त्यांनी खुशाल जावे ! हिंदूंनी जो मार खाल्ला ना तो या उदारतेमुळे आणि भिडस्तपणामुळेच.सर्वात जास्त सुधारणा झाल्या त्या आमच्या हिंदूधर्मातच.पण मुसलमान सुधारला नाही.पैगंबरसाहेबांच्या काळात ज्या प्रथा होत्या त्याच आजही चालू आहेत.काळाबरोबर बदलत नाही हा समाज.

प्रश्न :तुम्ही मुसलमानांचे कट्टर विरोधक आहात का ? बाळासाहेब :मी केवळ देशद्रोही मुसलमानांच्या विरोधात आहे.माझे विचार स्पष्ट आहेत.हिंदुस्थान — पाकीस्तान मधे क्रिकेट किंवा हॉकीची मॅच असेल त्यात पाकीस्तान जिंकला तर येथिल मुसलमान आनंदाने नाचू लागतात.रेडिओ , टिव्ही ला फ़ुलांचा हार घालतात.मिठाई वाटतात आणि पाकीस्तान हरला तर रडतात. असे का ? या मुसलमानांना देशात राहण्याचा हक्क नाही. म्हणूनच मी सांगतो की, त्यांनी आमच्या देशातून चालते व्हावे आणि ज्या देशाबद्दल त्यांना एव्हडी आपुलकी आहे , तिथे त्यांनी निघून जावे.त्यांच्या वाचून आमचे काहीएक अडत नाही. जे मुसलमान देशभक्त आहेत , ते मला आवडतात.



प्रश्न : रामजन्मभूमी आंदोलनात आपले सहकार्य कसे असेल ? बाळासाहेब :आम्ही मुसलमानांना स्पष्टच सांगितले आहे, येथे हिंदूंचेच मंदीर उभे राहील.इंजिनीयर्सची मदत घ्या आणि तिथली मिशद दुसरीकडे नेऊन ठेवा.मंदीर तोडून त्यावर मिशद बांधली असेल तर आम्ही ते कश्यासाठी आणि कुठवर सहन करायचे ? हिंदुस्थानातील कोणतीही मिशद खोदून काढली तर तिथे तुम्हाला प्राचीन मंदीरच सापडेल.पण आम्ही प्रत्येक मशीद पाडा म्हणत नाही. रामजन्मभूमी देऊन टाका. बस्स !

प्रश्न :आणि काशी विश्वनाथ म्हणजे श्रीकृष्ण जन्मभूमी ? बाळासाहेब : हा प्रश्नच कसा विचारता तुम्ही ? जे आमचे आहे ते आमचेच आहे बस.आता काही मुसलमानांची राजवट नाही. जे आमचे आहे ते आम्हाला द्यावेच लागेल.जे तुमचे आहे ते तुमचे आणि जे आमचे आहे तेही तुमचे हे चालणार नाही.या देशातील एक न एक इंच आमचा आहे , आमचा म्हणजे सर्व हिंदुस्थानी जनतेचा आहे.येथे कोणीही 'मुस्लिम इंडियन ' असू शकत नाही.इथे मुस्लिम इंडियनच्या नात्याने राहण्याचा त्याना कोणताही हक्क नाही.राहायचे असेल तर 'इंडियन मुस्लिम' म्हणून राहावे.तो शहाबुद्दीन एक वृत्तपत्र काढतो 'मुस्लिम इंडिया' या नावाने.माझा या नावाला तीव्र आक्षेप आहे.अखेर तो स्वतःला समजतो काय ? मुस्लिम नेत्याना मी वारंवार हेच सांगतो, तुमचे 'हिरवे कार्ड' काढू नका.नाहीतर मलाही माझे 'भगवे कार्ड' खेळावे लागेल आणि हे कार्ड तुमच्यापेक्षा जास्त मजबूत आहे.

बाळासाहेब हे अगदी सरळ , सहज , विश्वासू आणि साहित्याबरोबरच ऋीडाक्षेत्रात रस घेणारे , त्याचा आनंद लुटणारे व्यक्तिमत्व आहे.मी जेंव्हा त्याना त्यांच्या आवडीनिवडी बद्दल प्रश्न केला तेंव्हा त्यांनी मोठी रोचक उत्तरे दिली.मी विचारले

प्रश्न :आपण साहित्य वाचता ?

बाळासाहेब :नाही. मी वृत्तपत्रे जास्त वाचतो किंवा राजकीय विषयांवर आलेले एखादे पुस्तक आले तर ते वाचतो.



प्रश्न :आपला कोणी आवडता लेखक आहे ? बाळासाहेब :अनेक आहेत. महाराष्ट्रात कुसुमाग्रज आहेत.पु.ल.देशपांडे आहेत.पण सर्वात आवडते ते क्रिकेट !क्रिकेटच्या मोसमात मी सारे काही विसरुन जातो.फ़क्त टि.व्ही. वर मॅच पाहतो.क्रिकेटचे मला वेडच आहे म्हणा ना .

प्रवन :आपला आवडता खेळाडू ? बाळासाहेब : अर्थात गावस्कर.तो म्हणजे एक आश्चर्य आहे.गायिकांत म्हणाल तर आशा भोसलेंची गाणी मला जास्त आवडतात.त्यांच्याशी आमचे कौटुंबिक संबंधही आहेत.याशिवाय मला बागकामाचीही आवड आहे.

प्रश्न :महाराष्ट्राबाहेरील कोणती व्यक्ती तुम्हाला आवडते ? बाळासाहेब :भीमसेन जोशी.ते मूळचे कर्नाटकचे आहेत.आता ते महाराष्ट्रात स्थायिक झाले आहेत ही बाब निराळी.त्यांची प्रगती येथेच झाली.

प्रश्न :राजकारणात आपला आदर्श कोण ? बाळासाहेब :शिवाजी महाराजांशिवाय मी कोणालाच मानत नाही.

बाळासाहेबांची ही मुलाखत माझ्या 'समय का सच' या पुस्तकात प्रसिद्ध झाली आहे आणि ही मुलाखत माझी सर्वात आवडती आहे.कारण या मुलाखतीत खरोखर 'काळाचे सत्य' समोर येते.म्हणूनच शिवसेनाप्रमुखांचे विचार हिंदुस्थानविरोधी 'हिरव्या विषाचा' नायनाट करणा–या 'केशरी अमृतासमान ' आहेत, अशी माझी ठाम धारणा आहे.

बाळासाहेबांचे एकतर कट्टर अनुयायी तरी आहेत किंवा कट्टर विरोधक. बाळासाहेबांनी हिंदू स्वाभिमानाचे रक्षण केले. हिंदुत्वाच्या मुद्यावर तडजोड नाही, अशी रोखठोक भूमिका घेऊन ढोंगी धर्मनिरपेक्षतेविरुद्ध युद्ध पुकारले ते बाळासाहेबांनीच.यावर त्यांच्या अनुयायांचा गाढ विश्वास आहे.बाळासाहेबांचे विरोधकही त्यांच्या बोलण्यातील वजन ,ताकद आणि परिणाम मान्य करतात.अनेक वादळे आली आणि गेली.अण हिंदू मतांचे विभाजन रोखण्यासाठी त्यानी भाजपाशी युती कायम ठेवली.व्यक्तिगत फ़ायद्यासाठी किंवा जय-पराजयासाठी ते



राजकारण करत नाहीत,याची मला खात्री आहे.स्वाभिमान आणि गौरव नसणारा समाज हा 'मृतप्राय'च असतो.अन्न, वस्त्र, निवारा म्हणजेच समाज नव्हे.तसे असते तर सोविएट रिशयाचे साम्राज्य बुडालेच नसते आणि भारतियांनाही इंग्रजांच्या गुलामगिरीतून मुक्त होण्याची आवश्यकता नव्हती.जिवंत समाजच इतिहासाचा गौरव साक्षी ठेवून वर्तमानाशी संघर्ष करत भविष्यातील स्वप्नांचा विचार करत प्रगतीकडे वाटचाल करत असतो.मार्क्स आणि मेकॉलेच्या मानसपुत्रांनी पं. नेहरुंच्या छत्रछायेखाली इतिहासातील गौरवशाली घटना वगळून इतिहासाची पाने अपमान आणि विदेशी आक्रमकांच्या गौरवकथांनी भरुन टाकली.हिंदुस्थानच्या नव्या पिढीसमोर स्वाभिमानी भारताच्या स्वप्नाऐवजी बिगर भारतीय,बिगर हिंदूंचे उदत्तीकरण केले.याविरुद्ध संघटीत हिंदू समाजच टक्कर घेऊ शकतो.

राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघाचे संस्थापक पू.डॉ. हेडगेवार यांनी या देशात हिंदूंच्या संघटनांचे जे कार्य सुरु केले, त्यामागे उद्देश हाच होता की , हिंदूधर्मातील छोट्याछोट्या जाती ,स्पृश्य-अस्पृश्य , आणि संकुचित अहंकार सोडून सर्वांनीच सामर्थ्यशाली भारताची उभारणी करण्यासाठी एकदिलाने , एकजुटीने पुढे यावे. त्यासाठी अत्यंत साहसी अश्या हिंदू नेतृत्वाची गरज आहे.हा लढा उभारताना आम्हाला कट्टरपंथी जिहादींशी आणि विदेशी किंवा 'डॉलर्स'च्या जोरावर वाढणा-या खिश्चन धर्माशी लढावे लागत आहे, हे सत्य आहे.परंतु राष्ट्रियत्वाच्या भावनेने ओतप्रोत होऊन समाज जोपर्यंत संघटित होत नाही, तोपर्यंत हिंदूंचा विजय शक्य नाही.

हिंदूंचे संगठन म्हणजे खिश्चन किंवा मुस्लिमांना विरोध नव्हे.मुळात हिंदूंचे संगठन किंवा वर्चस्व हीच अन्य सर्व समाजांच्या धार्मिक ,सामाजिक आणि राजकीय स्वातंत्र्याची 'गॅरंटी' ठरते.कारण केवळ हिंदू हा एकमेव धर्म असा आहे की , की जो सर्वधर्मसमभाव मान्य करतो.आमच्या कोणत्याही धर्मग्रंथात केवळ हिंदूंचेच भले होवो ' किंवा 'केवळ हिंदूच निरोगी व ठणठणीत राहो' असे म्हणलेले नाही.सर्वांचे कल्याण होवो या , प्रार्थनेनेच प्रत्येक हिंदू धर्मीयांची पहाट उजाडते.अन्य धर्मातील लोक अशी प्रार्थना करु शकतील काय ? आणि मुळात

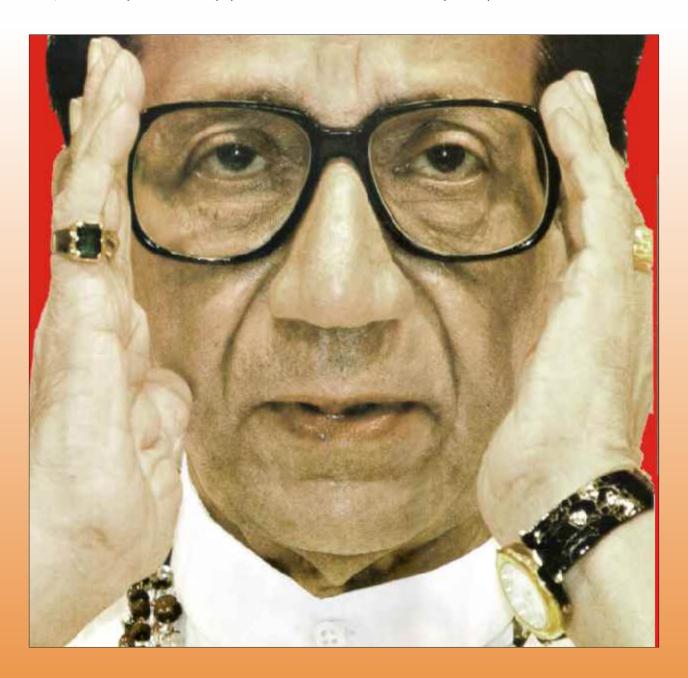


या देशात ज्या पद्धतीचा धर्मनिरपेक्षवाद चालवला जातोय तो ही एक वेगळाच समांतर धर्मच झालाय.तमाम धर्मनिरपेक्षवादी विशेषतः इंग्रजी वृत्तपत्रांना तर हिंदुत्वाची बाजू मांडण्याची ॲलर्जीच झाली आहे.उलट हिंदुत्वाविरुद्ध एकतर्फ़ी ,विकृत प्रचार करण्याची मोहीमच ही वृत्तपत्रे चालवतात.इतकेच नव्हे तर हिंदुत्वाविरुद्ध प्रसिद्ध केलेल्या चुकीच्या बातमीचा खुलासा छापण्याची तसदीही ते घेत नाहीत.भाजपाचे सरकार केंद्रात सत्तेवर असतानाही हिंदुत्वाचा गौरव ,प्रतिष्ठा,राष्ट्रिय स्वाभिमानाचे वातावरण निर्माण करण्यात अजूनही आम्हाला पावलापावलावर संघर्ष करावा लागत आहे.जेंव्हा एखादे निर्भिड नेतृत्व पुढे येइल तेंव्हाच ही परिस्थिती बदलू शकते.हिंदुत्वाच्या उदार ,सहिष्णू सर्वसमावेशी स्वरुपाचा , भित्रा , मार खाणारा हिंदूसमाज असा अर्थ होऊ न देणारा नेता हिंदू धर्माला हवा आहे.हे सारे गुण मला बाळासाहेबांच्यात आढळतात.परंतु त्यांच्या नि:संदिग्ध , परखंड हिंदुत्वनिष्ठ राजकारणाचा प्रवाह सतत झुळझुळत राहायला हवा.हिंदुत्वाच्या सिद्धांताचा आधार घेऊन चालणा-या राजकारणात स्वार्थ, सत्तालोलुपता, भ्रष्टाचार, अन्यायाला कदापि स्थान मिळता कामा नये. अवघे राष्ट्र तो दिवस पाहण्यासाठी व्याकुळ झाला आहे.परंतु नेत्यांनीच जनतेची नाडी न ओळखता देशभक्तांसाठी श्रेष्ठ आणि दुर्जनांना त्यांची जागा दाखवणारी व्यवस्था निर्माण केली नाही तर १ हजार वर्षांपासून आपल्या उराशी आशा बाळगून असणारा हिंदू समाज बंड करुन उठेल.स्वामी विवेकानंदांच्याच शब्दात सांगायचे तर पृथ्वी जसे सगळे काही आपल्या उदरात घेते , सारे सहन करते तसेच समाझी सारे काही दीर्घकाळ निमूटपणे सहन करतो.परंतु एकवेळ अशी येते की, त्यांच्या आतील असंतोषाचा अग्नी उफ़ाळून वर येतो आणि त्यातच सारे काही नष्ट हो ऊन जाते. धुळीत मिळते. आम्हालाही बाळासाहे बांसारख्या आदरणीय नेत्याच्या नेतृत्वाखाली केवळ राष्ट्राच्याच विरोधकांचा खातमा करायचा नाही तर हिंदू समाजात असलेल्या वाईट चालीरीती, परंपरा,स्पृश्य-अस्पृश्यतेसारख्या समाजाला तोडणा-या सर्वच वाईटांचा नि:पात करावा लागेल.आज हिंदूच हिंदूचा रात्र बनला आहे.हिंदूंची मंदीरे अस्वच्छ बनली आहेत.हुं श्वासाठी हिंदू तरुणींना जाळले जाते.हिंदू तरुणींना फ़सवून मुस्लिम करण्याचे सत्र चालूच आहे.आणि आपले हिंदूच त्याचे समर्थन करताना आढळतात.हिंदूंच्या श्रद्धास्थानांचा हिंदूच तिरस्कार करतात.अपमान करतात.अश्या स्थितीत हिंदू आपापसातील मतभेद



विसरुन एक झाला तरच भारताच्या वैभवाच्या मार्गातील सर्व अडथळे दूर करणे ज्ञक्य आहे.

बाळासाहेबांच्या रुपाने जगभरातील हिंदूधर्मियांच्या डोळ्यात आशेचे किरण प्रज्वलित होतात.प्रखर होतात.म्हणूनच आमचे ईश्वराकडे एकच मागणे आहे की, बाळासाहेबांना दीर्घायुरारोग्य दे. त्यांच्या नेतृत्वाखाली हिंदुस्थानाला छत्रपति शिवाजी महाराजांच्या हिंदवी स्वराज्याचे स्वरुप प्राप्त होऊ दे!



## जात्युच्छेदन आणि हिंदुत्व – सावरकर आणि शिवसेना ––चिन्मय कुलकर्णी––

तुम्ही आम्ही हिंदू बंधुबंधू
तो महादेवजी पिता आपला चला तया वंदू
उभयांनी दोष उभयांचे खोडावे
देषासी दुष्ट रुढींसी सोडावे
सख्यासी आईच्यासाठी जोडावे
-स्वातंत्र्यवीर सावरकर

वरील ओळीतून सावरकर 'समस्त हिंदू एकमेकांचे बंधू आहेत' म्हणून सांगतात पण हिंदू समाजला लागलेला सर्वात मोठा शाप म्हणजे 'जात ' हा आहे.जर समस्त हिंदू बंधूंची एकजूट करायची असेल तर ही 'जात' संपविणे आवश्यक आहे.आणि हिंदूंची एकजुट करणे हे हिंदुत्वाचे लक्ष आहे.मग हिंदुत्वाचा एल्गार करणा–या सावरकर आणि शिवसेना यांनी याबद्दल काय भूमिका घेतली आणि काय कार्य केले याचा थोडा विचार करुया.

#### स्वातंत्र्यवीर सावरकर:

'हिंदुत्व' हा शब्दच ज्यांनी दिला आणि आधुनिक हिंदुत्व ज्यानी एका अर्थाने सुरु केले त्या स्वातंत्र्यवीर सावरकरांचे जात्युच्छेदनात सर्वात मोठे योगदान आहे.ज्या काळात देशात अस्पृश्यता होती,देशावर अनेक अंधश्रद्धा आणि कालबाह्य रुढी परंपरांचा प्रभाव होता तेंव्हा सावरकरांसारख्या अस्सल बुद्धिवाद्याने, विज्ञानवाद्याने ,आणि हिंदुत्ववाद्याने त्यावर अखंड प्रहार केले.आपल्या लेखनाने कोणी सनातनी दुखावेल म्हणून त्यंनी ते विचार मांडणे सोडले नाही.त्यांनी रलागिरीतील वास्तव्यामधे अनेक समाज सुधारणा केल्या.जवळपास ५०० मंदीरे अस्पृश्यांसाठी खुली केली.अनेक आंतरजातीय विवाह लावले. अनेक सहभोजने केली.त्यानंतर सर्वांसाठी 'पतितपावन' मंदीर सुरु केले व सर्वांसाठी भोजनालय ही सुरु केले.या सर्वांमुळे सनातनी ब्राह्मण भडकले आणि सावरकरांना धर्मद्रोही ठरवून 'त्यांना पेशवाई असती तर हत्तीच्या पायी दिले गेले



असते' असा ठराव मांडला गेला.सावरकरांनी त्यावर 'शिवशाहीत किंवा पहिल्या बाजीरावाच्या पेशवाईत आमच्या सारख्या हिंदुसंघटकांना हत्तीच्या पाठीवरील अंबारीत बसवून मिरवण्याचा संभव अधिक होता' असे सडेतोड उत्तर दिले.शेवटच्या कालखंडात सावरकरांनी सांगितले होते की 'माझी मार्सेलिसची उडी विसरली तरी चालेल पण माझे रत्नागिरीतील कार्य विसरु नका'. हिंदुत्वासाठी राष्ट्रवादासाठी आणि मुख्यत्वे मानवतेसाठी जात्युच्छेदन सर्वात महत्वाचे आहे हे सावर्करांनी बरोबर ओळखले होते.आजकाल आपले समर्थक दूर जातील म्हणून फ़क्त विरोधकांवरच हल्ला करणारे लोक आहेत.त्यामुळेच ते यशस्वी राजकीय नेते आहेत तर सावरकर हे 'विचार्वंत, प्रबोधक व समाज सुधारक' ठरतात.

माननीय बाळासाहेब ठाकरे यांनी कडव्या आणि जहाल हिंदुत्वाचा पुरस्कार करणा-या शिवसेनेची स्थापना केली.बाकी शिवसेना ही एक संघटना नाही तर एक राजकीय पार्टी आहे त्यामुळे त्यांच्या याविषयीच्या कार्यात अनेक मर्यादा आहेत.राजकीय पक्ष अशी कोणतीही भूमिका घेऊ शकत नाहेत की ज्यामुळे त्यांचे मतदार दुखावतील.त्यामुळे समाज प्रबोधनास अनेक मर्यादा राजकीय पक्षाला येतात.शिवसेना ही हिंदुत्वाच्या क्षेत्रात उतरलेली शेवटची संघटना आहे.पण जात्युच्छेदनाचे कार्य इतर हिंदुत्ववाद्यांनी सुरुही केले नव्हते तेंव्हा शिवसेनाप्रमुख बाळासाहेब ठाकरे यांचे वडिल प्रबोधनकार ठाकरे यांनी ते मोखाप्रमाणावर सुरु केले होते.जुन्या काळातील जातिपाती , अनिष्ट रुढी, परंपरा यांना त्यांनी प्रखर विरोध केला होता. शिवसेनाप्रमुखांकडे त्यामुळेच हे गुण येणे स्वाभाविकच होते.सेना प्रमुखांनी शिवसेना सुरु केली होती तेंव्हाच आपले ब्रह्मवाक्य दिले होते 'ब्राह्मण-ब्राह्मणेतर , मराठा-मराठेतर , स्पृश्य-अस्पृश्य हे वाद गाडा आणि सर्वांची एकजुट करा'.या भूमिकेवर चालण्यास ते ब-याच अंशी यशस्वी ठरले आहेत.शिवसेना हा असा एकमेव राजकीय पक्ष आहे की जेथे जातीपातीची छुपी राजकारणे, पायखेची होत नाहीत. जातीच्या आधारवर नव्हे तर आर्थिक मागसलेपणावर आधारित आरक्षण देण्यात यावे ही मागणीही त्यांनी गेली अनेक दशके लाऊन धरली आहे.त्याचबरोबर सेनाप्रमुखांनी गरीब आणि श्रीमंत या दोनच जाती आहेत.या दोन सोडल्या तर तिसरी जात नाही अशी



जातीव्यवस्थेविरुद्ध स्पष्ट भूमिका मांडली आहे.त्यामुळेच महाराष्ट्राचा पहिला ब्राह्मण मुख्यमंत्री देऊनही त्यांच्यावर मनुवादी हा ठपका बसू शकला नाही.

हिंदुत्वाचा झेंडा घेऊन जेंव्हा शिवसेना प्रमुख महाराष्ट्रभर फ़िरले तेंव्हा 'शेंडी जानव्याचे हिंदुत्व मला करायचे नाही ' हे ठासून सांगितले.त्याचप्रमाणे वागणूकही ठेवल्यामुळे ओबीसींनी शिवसेनेला भरघोस पाठिंबा दिला.हिंदु धर्माच्या पालनाच्या बाबतीत त्यांनी व्यक्तिगत स्वातंत्र्यही दिलेले आहे असे दिसते.तुमच्या मनाला पटेल त्या पद्धती अवलंबा, पण त्या व्यक्तिगत स्तरावर.बाळासाहेबांचे हिंदुत्व हे प्रतिकार व जहाल पद्धतीचे आहे.सर्व जातीच्या लोकांना बरोबर घेऊन, त्यांची जातपात गाडून एक बलाढ्य राष्ट्रवादी शक्ति बनविण्याचा आहे की जि शिक्त राष्ट्रद्रोह्यांवर वरवंटा फ़िरवेल.त्याबद्दल मा. बाळासाहेब म्हणतात की 'या हिंदुस्थानावर आणि हिंदूंवर कोणी वाकडी नजर टाकेल त्याला झोडपणारे माझे हिंदुत्व आहे.मला मंदीरात घंटा बडविणारा हिंदू नकोय तर धर्मांध देशद्रोही मुस्लिमांना बडवणारा हिंदू हवा आहे.' सावरकर आपल्या 'हिंदुत्व' या पुस्तकात हिंदुत्व आणि हिंदुधर्म हे वेगवेगळे आहेत हे स्पष्ट सांगतात. मा.बाळासाहेबांचे हिंदू धर्मातील विविध धारांपासून दूर असणारे हिंदुत्व सावरकरांना अपेक्षित असणा-या हिंदुत्वाशी साधर्म्य दाखवणारे आहे.शुब्दीच्या वेळीही गंगाजल शिंपडू नका असे सावरकरांनी सांगितले आहे तशीच एक घटना शिवसेनाप्रमुखांच्या बाबत घडलेली आहे.श्री. बाळासाहेब कांबळे यांना खिश्चन धर्मातून पुन्हा हिंदूधर्मात प्रवेश करायचा होता.ते शिवसेनाप्रमुखांकडे आले आणि त्यांनी तसे सांगितले. तिथे काही हिंदुत्ववादी मंडळी होती , ती म्हणाली 'आता व्रतवैकल्ये, यज्ञयाग , होमहवन करा आणि जेवणावळ घाला.त्यावेळी मा.बाळासाहेब उद्गारले ' कसल्या जेवणावळी वाढताय ? त्याला गंध लावा आणि जयहिंद म्हणायला लावा , की झाला तो हिंदू !!' म्हणजे यज्ञयाग व्रतवैकल्ये चुकीची आहेत असे नाही तर त्यात हिंदुत्व अडकवू नका.अर्थातच आपले मतदार दुखावतील म्हणून अनेकदा प्रखर भूमिका कुठल्याही राजकीय पक्षाला घेता येत नाही.त्यामुळे शिवसेनेवरही तशी मर्यादा आहे.शिवसेनेने तशी मोठी आंदोलने वगैरे याविषयावर केली नाहीत पण त्यांच्या



पक्ष्याचे नियमन आणि आचरण नक्कीच राजकीय पक्ष्यास स्वागतार्ह आहे. जात्युच्छेदनासाठी संघाने सेनेपेक्ष्या जास्त काम केले असेलही पण संघ ही एक संघटना आहे आणि शिवसेना हा राजकीय पक्ष आहे हे विसरुन चालणार नाही.शिवसेनेने जात्युच्छेदनाच विचार आणि कार्य स्वतःच्या आचरणातूनच दाखवून दिलेले आहे.

#### सध्याची परिस्थिती आणि भविष्य :

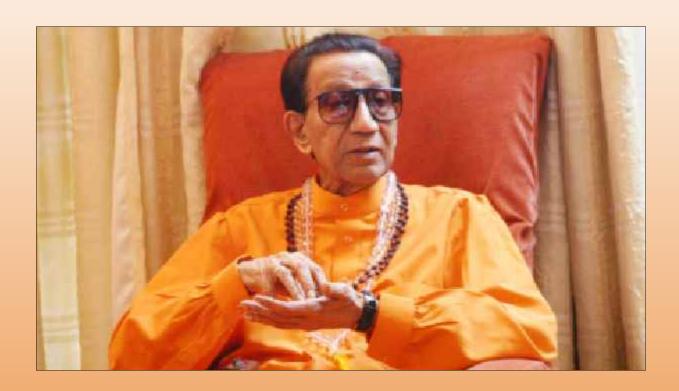
सध्या जातीपातीतेल संघर्ष वाढीस लागला आहे.देशात लोक आपली ओळख म्हणजे जातच सांगतात.जातिनिर्मूलनाचे कार्यच झाले नसल्याने जातींचे समूहच बनले आहेत.आमचे 'सोशल इंजिनीयरींग' ही जातीच्याच नावाने होते.विविध जाती स्वतःची 'महासम्मेलने' भरवून काय साधत आहेत कोण जाणे. राजकारणात ही व्यक्तीची जात ब—याच गोष्टी ठरवून जाते.आजही अस्पृश्यता पूर्णपणे संपलेली नाही आणि खैरलांजी सारखी मानवतेला काळीमा फ़ासणारी प्रकरणे घडत आहेत.विविध जातीच्या लोकांनी जातीच्या भल्याच्या नावाखाली स्वतःचेच 'भले' करुन घेतले आहे.सर्वात दुर्दैवाची गोष्ट म्हणजे जातीनिर्मूलनासाठी आयुष्यभर झटणा—या डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची चळवळही आजकाल जातीपुरतीच सीमित झाली आहे.

सवर्णां मध्ये 'आम्ही कुठल्याही आरक्षणाशिवाय यशस्वी झालो ' असे म्हणत श्रेष्ठ भाव निर्माण होऊ लागला आहे.त्याचबरोबर अभिजन म्हणजे तो वाईटच असला पाहीजे असा नवजातीयवाद निर्माण होऊ पहात आहे.त्यासाठी स्वातंत्र्यवीर सावरकर यांच्या सारख्या द्रष्ट्या नेत्याची, विचारवंताची आणि प्रबोधकाची आवश्यकता आहे.चर्चिलने एकदा म्हणले होते ' इंडिया इज नॉट अ नेशन बट इट इज अ कलेक्शन ऑफ़ ट्राईब्ज !'. हे वक्तव्य धादांत चुकीचे आहे असे माझे स्पष्ट म्हणणे आहे.पण जात्युच्छेदनाचे काम जोरात सुरु झाले नाही तर चर्चिल चे मत खरे ठरण्याची भीती आहे.आपल्या देशाचे हित यातच आहे की आपण आपली जात–पात विसरुन एकत्र आले पाहिजे.हिंदुत्ववाद्यांनी त्यासाठी कार्य करणो जरुरीचे आहे.तथाकथित धर्मनिरपेक्षवादी हे कार्य मुळीच करणार नाहीत कारण हिंदू समज एकत्र व्हावा असे त्यांना वाटतच नाही.म्हणून हिंदूंच्या



एकजुटीच्या ते विरुद्ध आहेत. त्यामुळे हिंदुत्वाला चांगले दिवस यायचे असल्यास जात्युच्छेदनाच्या कार्याला अग्रऋम हिंदुत्ववाद्यांनी द्यायला हवा.जात्युच्छेदनाशिवाय हिंदुत्व ही कल्पनाच वेडगळपणाची आहे.आणि म्हणूनच शिवसेनाप्रमुख बाळासाहेब ठाकरे यांचे आधी केले मग सांगितले स्वरुपातील कार्य अतिशय महत्वाचे ठरते.

http://gandharvablog.blogspot.com/





## बोधकथा : मनातील आशा विझून देवू नका.

--ओंकार कुलकर्णी --

एका गावात एका छानश्या टुमदार घरात एक लहान मुलगा राहात होता. .त्या घरातील लोक सदुणी होते.घरात एक देवघर होते.तिथे देवापुढे एक समई नेहमी तेवत असे.समईच्या पाचही ज्योतींमुळे घरात एक तर्हेचा प्रसन्न उजेड पडलेला असे.मात्र अलिकडे त्या गावातील स्वस्थता काही विघ्नसंतोषी उपटसुंभ बाहेरुन आलेल्या लोकांमुळे हरवलेली होती.

त्या घरातील सतत तेवणा-या समईतील ज्योतिही एक दिवस अस्वस्थ होऊन आपसात बोलू लागतात.

पहिली ज्योत म्हणते "माझे नांव शांती आहे.पण हल्ली जणू सगळ्यांनाच मी नकोशी झालेली आहे. तेंव्हा मी विझलेलेच बरे. " असे म्हणून ती पटकन विझून जाते.

दुसरी ज्योत म्हणते " माझे नांव श्रद्धा आहे. अलिकडे माझ्यावर बरेच हल्ले होत आहेत , मी अगदी कंटाळून गेले आहे.तेंव्हा मीही विझलेलेच बरे." असे म्हणून तीही पटकन विझून जाते.

तिसरी ज्योत म्हणते " माझे नांव प्रेमा आहे. पण अलिकडे मी पहाते आहे की एकमेकावर कुरघोडी करणे, अप्पलपोटेपणा, स्वार्थी वृत्ती वाढल्याने आपापसातील प्रेम नष्ट झाले आहे. म्हणून मी राहून काय करु ? मी ही विझलेलेच बरे." असे म्हणून तीही विझून जाते.

चौथी ज्योत म्हणते " माझे नांव चैतन्या. पण शांती गेली,श्रद्धा गेली, आता प्रेमही गेले मग मी कशी राहू शकणार ? मी ही विझलेलेच बरे."असे म्हणून तीही विझून जाते.

इतक्यात लहानसा मुलगा देवघरात येतो आणि कधी नव्हे त्या विझलेल्या ज्योती पाहून त्या ज्योतींना म्हणतो " तुम्ही का विझलात ? तुम्ही सतत तेवत राहायला हवे आहात मला. !" आणि तो रडू लागतो.त्याचे ते केविलवाणे रडणे पाहून पांचवी ज्योत त्याला म्हणते "अरे वेड्या रडतोस काय ? घाबरु नकोस .माझे नांव आशा आहे.मी तर अजून तेवत आहे नां ? मग माझ्या मदतीने तू उरलेल्या चारही ज्योती पुन्हा पेटव की !"

मुलगा चपापतो आणि खुश होतो.त्याच्या डोळ्यात चमक येते आणि तो पाचव्या ज्योतीच्या मदतीने विझलेल्या चारही ज्योती पुन्हा पेटवतो. आणि घर पुन्हा त्या प्रसन्न प्रकाशाने उजळून जाते.

मित्रांनो आणि मैत्रिणींनो आपल्या जीवनातून आशेची ज्योत कधीच मालवून देवू नका.ती सतत तुमच्या मनात तेवत राहो हीच सदीच्छा.



#### वाचकांसाठी सूचना :

- <mark>आपला पुढील अंक हिंदू–नववर्षदिन गुढीपाडवा</mark> तसेच निवडणूक–२००९ 8) या विषयावर असणार आहे.
- तसेच पुढील अंका पासून आपण "शिवप्रताप" हे छत्रपति शिवाजी 7) महाराजांची राजनीती,रणनीती आणि थोरवी सांगणारे सदर सुरु करत आहोत.इतिहासचे ज्येष्ठ अभ्यासक श्री. सुभाष खडकबाण ह्या सदराचे लेखक आहेत.
- कुपया आपले साहित्य २२ मार्च पूर्वी पाठवावेत ही विनंती. 3)
- 8) To subscribe to this Free-of-Cost e-Magazine send an e-mail to subscribe.matrubhoo@gmail.com
- 4) To send articles for publishing and feedback e-mail to matrubhoo@gmail.com

आभार : http://gandharvablog.blogspot.com/

#### विशेष आभार :

- 8) मा. राज ठाकरे
- पंढरीनाथ सावंत,मार्मिक **२**)
- अरविंद भोसले , शाखाप्रमुख, कणकवली तालुका संपर्कप्रमुख. 3)

### दिनविशेष

हिंदू धार्मिक : भारतीय लोकशाही / युग पुरुष :

१५ मार्च १)धर्मवीर संभाजीमहाराज पुण्यतिथी २६ मार्च. १)रंगपंचमी

१९ मार्च २)डॉ.हेडगेवार जयंती २)वर्षीतपारंभ (जैन) २७ मार्च.

२७ मार्च ३)छत्रपति शिवाजीमहाराज पुण्यतिथी ९ एप्रिल ३)गुढीपाडवा

४)महात्मा ज्योतिबा फ़ुले जयंती ४)मत्स्य जयंती २९ मार्च ११ एप्रिल

५)श्री पंचमी/लक्ष्मी पंचमी ३१ मार्च

६)श्रीराम नवमी ३ एप्रिल

७)श्री महावीर जयंती ७ एप्रिल

८)श्री हनुमान जयंती ९ एप्रिल

संपादक : विक्रमादित्य

मुखपृष्ठ व मांडणी : आशुतोष पाटणकर

विशेष सहकार्य : ओंकार कुलकर्णी, सूरज महाजन संकल्पना : आदित्य भोसले, मातृभूमी सेवा चॅरिटेबल ट्रस्ट अंकात प्रसिद्ध लेखांशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही.

मातृभूमीच्या मागील अंकांसाठी http://matrubhoomi.bravehost.com

